## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार,

## 24 से 31 जुलाई, तक कपास की खेती के लिए सुझाव

**'A+'**
**NAEAB – ICAR Accredited**

पिछले पखवाड़े में हरियाणा राज्य में मानसून सक्रिय रहा है, जिस से कुछ जिलों में अच्छी बरसात हुई है। मौसम विभाग के अनुसार आगे भी अच्छी बरसात हो सकती है। वर्षा के बाद अगर फसल में पानी भरता है तो जल निकासी का प्रबंध अवशय करें। इस प्रकार के मौसम में हरा तेला, सफेद मक्खी एवं जड़ गलन रोग का प्रभाव देखने को मिलता है, इसलिए बारिश के बाद खेत की निगरानी अवश्य करें तथा मौसम को देखते हुए ही स्प्रे व् और अन्य क्रियाएं करें, एवं हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा नीचे बताई गई सिफारिशों का अनुसरण करें।

### सस्य क्रियाएँ

- 45 दिन से ऊपर की बी टी कपास में अच्छी बारिश के बाद एक बैग यूरिया प्रति एकड डालें। अगर बिजाई के समय डीएपी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डीएपी या एन. पी. के. डालें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। हर बरसात या पानी लगाने के बाद कपास में निराई गुड़ाई अवश्य करें।
- बी. टी. कपास की फसल अगर 60 दिन से ऊपर की है तो 2% यूरिया, 0.5% जिंक सल्फेट (21%) का 10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।
- सूक्ष्म पोषक तत्त्व जैसे की बोरोन, मैंगनीज और आयरन केवल लक्षण दिखाई देने पर ही डालें।
- बी.टी. कपास की अधिकतम उत्पदान के लिए बौकी एवं फूल बनने की अवस्था पर सिंचाई या बारिश से पूर्व एवं बाद (12 घंटे के भीतर) NAA की 25 मि.ली. और कोबाल्ट क्लोराइड की एक ग्राम मात्रा को 100 लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।

### कीट प्रबंधन

- जिन किसान भाइयों की नरमा की फसल के आसपास पिछले साल की नरमा की बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले भी एवं अधिक होता है। गुलाबी सुण्डी अदखिले टिंडों में नरमे के दो बीजों (बिनौले) को जोड़कर 'भंडारित लकड़ियों' में निवास करती हैं।
- फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी सुण्डी से ग्रसित फूलों एवं रोजेटी फूल (गुलाबनुमा फूल) आदि को एकत्रित कर नष्ट करें।
- गुलाबी सुंडी के प्रकोप की निगरानी अपने खेतों में लगी फसल के 40–45 दिनों की होने के बाद लगातार करें। इसके लिए गुलाबी सुंडी के 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमे फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों को ३ दिनों के अंतराल पर गिनती करें।
- जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12–15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तथा फसल में बौकी/डोडी एवम् फूल लगने शुरू हो गये हो तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता हैं।

इसके लिए पहला छिड़काव नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बीसिडीन या अचूक) की 5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें।

- इसके अतिरिक्त अपनी फसल में कम से कम 100 फूलों का गुलाबी सुंडी के लिए निरिक्षण करें। टिन्डे बनने के बाद गुलाबी सुंडी ज्यादातर टिंडों में पाई जाती है। अतः एक एकड़ से 20 - 25 टिन्डे (12–15 दिन पुराने) तोड़कर टिंडो को फाड़कर निरिक्षण करें।
- नरमा की फसल 60 दिनों की होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों (फूल एवम् टिंडो) पर 5–10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी की 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। इसके बाद अगला छिड़काव जरुरत पड़ने पर क्यूनालफास 20 ए.एफ. की 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 10–12 दिनों बाद करें।
- जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा का प्रकोप होता हैं। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें तथा इसके बाद रासायनिक कीटनाशक अगर गुलाबी सुंडी के लिए प्रयोग किया गया हो तो थ्रिप्स का भी नियंत्रण हैं।
- जुलाई माह में कपास की फसल में सफेद मक्खी वं हरे तेला का भी प्रकोप शुरू हो जाता हैं इसलिए इनकी निगरानी रखें। सफेद मक्खी यदि 6–8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिलते हैं तो फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 175 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।
- नरमा की शुरुआती अवस्था में ज्यादा जहरीले कीटनाशकों एवं कीटनाशकों के टैंक मिश्रण का प्रयोग ना करे ऐसा करने से मित्र कीटों की संख्या कम हो जाती है तथा रस चूसने वाले कीड़ों की समस्या बढ़ने लगती है।
- देसी कपास में इस माह चित्तीदार सुंडी का प्रकोप पाया जाता है। इसके नियंत्रण के लिए 100–125 मि.ली. फैनवलरेट (फैनवाल) 20 ई सी को 150–175 लीटर पानी में घोलकर एक छिड़काव करें। ज्यादा प्रकोप होने पर स्पाइनोसेड (ट्रेसर) 45 एस सी की 75 मिली मात्रा प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- बरसात के मौसम में स्प्रे के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डवित, सेलवेट 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 175 – 200 लीटर घोल मिलाएं।

**रोग प्रबंधन**

- जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें, ताकि बीमारियों को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400 - 500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें ।
- जड़ गलन रोग के लिए दवाई डालते समय किसान भाई पीठ वाले स्प्रे पंप का प्रयोग करते समय मोटे फव्वारे का प्रयोग करके जड़ों के पास इस फफूंदनाशक घोल को डालें।
- पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें ।

- जीवाणु अंगमारी रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें।
- पैराविल्ट के लिए किसान भाई लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें परंतु पौधे सूख जाने दवा का असर नहीं होगा ।
- फसल की लगातार निगरानी रखें व प्रारंभ में पत्ती मरोड़ रोग से ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर दबा देना चाहिए।

**अन्य सलाह**

- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विभाग द्वारा समय समय पर जारी मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर ही कीटनाशकों एवं फफूंदनाशकों का प्रयोग करें।


**अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें**

8002398139 7015105638 9812700110 9416530089 9466812467 9041126105 9992911570 8901047834

**कपास अनुभाग, आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग**

**अनुसंधान निदेशालय, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय , हिसार**

# जुलाई में कपास में आने वाले कीटों एवं बीमारियों के लक्षण

ट्रैक्टर द्वारा जुताई  की गई कपास

गुलाबी संडे के प्रकोप से गुलाबनुमा फूल

फिरकीनुमा या पँखनुमा बोक्की

फूल में गुलाबी सुंडी

हरा तेला के प्रकोप के लक्षण

पत्ती की निचली सतह पर सफेद मक्खी का प्रकोप

जड़ गलन रोग से प्रभावित पौधे

जड़ गलन रोग से प्रभावित जड़

पत्ती मरोड़ रोग के लक्षण

पैराविल्ट रोग के लक्षण

अधिक बरसात के बाद पंप द्वारा जल निकासी